बाजरा

स्थानीय बाजरे तुलना में संकर बाजरे की एवं संकुल किस्मों की पैदावार काफी अधिक है। जहां वर्षा की कमी हो अर्थात जहां वर्षा 250–300 मिलीमीटर के आसपास होती है वहां भी संकर या संकुल बाजरा असिंचित फसल के रुप में बोया जा सकता है।

कृषि पारिस्थितिकी स्थितिवार किस्में :–

ए.ई.एस.–I	ए.ई.एस.–II	ए.ई.एस.–III	ए.ई.एस.–IV
कम वर्षा, रेतीले टिब्बे के बीच असमतल क्षेत्र	कम वर्षा तथा गहरे समतल रेतीले क्षेत्र	कम वर्षा, मध्यम से भारी मृदाएं जिसके कठोर सतह का होना	तीनों परिस्थितियों का सिंचित क्षेत्र
संकर एच एच बी 67 (उन्नत) एच एच बी 67 जी एच बी 538 आर एच बी 121 आई सी एम एच 356 एम एच 169 एम पी एम एच 17 एम पी एम एच 21 **संकुल** राज 171 सी जेड पी 9802 एम बी सी 2	**संकर** एच एच बी 67 (उन्नत) एच एच बी 67 जी एच बी 538 आर एच बी 121 आई सी एम एच 356 एम एच 169 एम पी एम एच 17 एम पी एम एच 21 **संकुल** राज 171 सी जेड पी 9802 एम बी सी 2	**संकर** एच एच बी 67 (उन्नत) एच एच बी 67 जी एच बी 538 आईसीएमएच 356 एम पी एम एच 17 एम पी एम एच 21 **संकुल** सी जेड पी 9802 एम बी सी 2	–

उन्नत किस्में एवं विशेषताएं

एम एच 169 (पूसा – 23) (1987) :– यह किस्म मध्यम ऊँचाई 165 से.मी. व चमकीले पत्तों की होती है। इस किस्म के सिट्टे कसे हुए होते हैं तथा परागण पीले रंग के होते हैं। 80–85 दिन की मध्यम अवधि में पकने वाली इस किस्म के दानों का रंग हल्का स्लेटी व दाने

मोटे होते हैं। इसमें दानों की औसत पैदावार 20–30 क्विण्टल/हैक्टेयर है। यह किस्म जोगिया (ग्रीन ईयर) रोग रोधी व मध्यम सूखा सहन करने की क्षमता रखती है।

एच एच बी 67 (1990) :– यह किस्म वर्षा की कमी और अधिकता दोनों ही परिस्थितियों हेतु उपयुक्त है। 65–70 दिन में पकने वाली इस संकर किस्म के पौधे 140–195 सेन्टीमीटर ऊँचे तथा सिट्टे 15–20 सेन्टीमीटर लम्बे शंकु आकार के होते हैं। तना पतला होता है एवं यह जल्दी व देरी से बुवाई के लिये उपयुक्त है। 15–20 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर उपज देने वाली इस किस्म के दाने सामान्य मोटाई के होते हैं। इससे प्राप्त सूखे चारे की पैदावार 15–20 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म तुलासिता रोग प्रतिरोधी है।

राज 171 (एम पी 171) (1992) :– मध्यम व सामान्य वर्षा वाले क्षेत्रों हेतु उपयुक्त, 85 दिन में पकने वाली इस संकुल किस्म के पौधों की ऊँचाई 170–200 सेन्टीमीटर तथा सिट्टों की लम्बाई 25–27 सेन्टीमीटर है। सिट्टे लम्बे, सामान्य मोटे, बेलनाकार, ऊपरी भाग में कुल पतले दानों से कसे हुए होते हैं। तना मोटा तथा दो तीन फुटान वाला होता है। दाना हल्की पीली झांई लिये हुए हल्का स्लेटी होता है। तुलासिता रोग प्रतिरोधी यह किस्म 20–25 क्विण्टल दाने एवं 45–48 क्विण्टल चारे की पैदावार प्रति हैक्टेयर होती है।

आई सी एम एच 356 (1993) :– 160 से 175 सेन्टीमीटर ऊँची, जोगिया रोगरोधी इस संकर किस्म की पकाव अवधि 75 दिन एवं उपज 18–20 क्विण्टल है।

आर एच बी 121 (2001) :– संकर बाजरा की इस किस्म के पौधों की ऊंचाई 165–175 से.मी. होती है। जोगिया (ग्रीन ईयर) रोगरोधी होने के साथ ही इसमें मध्यम सूखा सहन करने की क्षमता भी है। इसके सिट्टे पर रोयें होते हैं तथा इसकी पकाव अवधि 75–78 दिन है। इसमें दाने की औसत उपज 22–25 क्विण्टल तथा चारे की उपज 26–29 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर है।

सी जेड पी 9802 (2002) :– यह किस्म मध्यम ऊँचाई 185–200 से.मी. तथा चमकीले पतों वाली किस्म हैं। इस किस्म के सिट्टे बिना बाल

वाले कसे और हल्के कसे हुए होते हैं। परागण बैंगनी से भूरे रंग के होते हैं। 70 से 75 दिन में पकने वाली इस किस्म के दानों का रंग हल्का पीलापन लिये हुए मध्यम आकार का होता है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी व पैदावार 13 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर है।

जी एच बी 538 :– अधिक उपज देने वाली इस संकर बाजरा की किस्म के पौधों की ऊँचाई 155–165 से.मी. होती है। इस किस्म की पकाव अवधि 70–75 दिन है तथा सिट्टे सख्त, बेलनाकार व बिना रोंये के 22–25 से.मी. लम्बे तथा पराग कण पीले रंग के होते हैं। यह किस्म जोगिया रोग के लिए प्रतिरोधी तथा तना छेदक व तना मक्खी के प्रति सहनशील है तथा इसमें सूखा सहन करने की क्षमता भी है। इसमें दानों की औसत उपज 24 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तथा चारा 42 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर होता है।

एच एच बी 67–2 (2005) :– एच.एच.बी. 67 के समान ही जल्दी पकने वाली (62–65 दिन) इस संकर बाजरा की किस्म के पौधों की ऊँचाई 160–180 से.मी. होती है। इस किस्म के सिट्टे सख्त, रोंयेदार व 22–25 से. मी. लम्बे तथा परागण पीले रंग के होते हैं। यह किस्म जोगिया रोग प्रतिरोधी तथा सूखे के प्रति सहनशील है। इसमें एच.एच.बी. 67 की तुलना में दाना तथा चारा की औसत उपज 22 प्रतिशत ज्यादा होती है।

जी एच बी 719 :– संकर बाजरा की इस किस्म में बालिया 43 से 45 दिन में निकलती है तथा 70–75 दिन में पक जाती है। इस किस्म के पौधों की ऊँचाई 165–170 सेमी होती है तथा सिट्टे पूरी तरह बाहर निकले शंकु आकार के रोयेंयुक्त 20–22 सेन्टीमीटर लम्बे तथा परागण क्रीमी रंग के होते है इसके दाने मध्यम आकार के भूरे रंग के तथा दानों की औसत उपज 20–24 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा चारा 40–50 क्विंटल प्रति हैक्टर होता है। यह किस्म जोगिया रोग के लिये प्रतिरोधी व कीड़ों के प्रति सहनशील है तथा इसमें सूखा सहन करने की क्षमता भी है।

जी.एच.बी.–744 (2008) : बाजरा अनुसंधान केन्द्र, जुनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस संकर किस्म का जनन आई.सी.एम.ए. 98444 (मादा) एवं जे. 2340 (नर) के संयोग से किया गया है। इस किस्म के पौधों की ऊंचाई 180 से 195 सेमी. तथा सिट्टो की लम्बाई 23 सेमी. है। जोगिया रोग रोधी तथा मध्य अवधि (78–83 दिन) में पकने वाली इस

किस्म के अनाज की औसत पैदावार लगभग 28 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तथा सूखे चारे की औसत पैदावार 71 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म का सिट्टा बेलनाकार, दानों से कसा हुआ तथा दाना हल्का भूरा गोलाकार होता है।

एच.एच.बी.–197 (2008) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस संकर किस्म का जनन आई.सी.एम.ए. 97111 (मादा) एवं एच.बी.एल. 2340 (नर) के संयोग से किया गया है। अच्छे फुटान वाली इस किस्म की ऊंचाई 170 से 185 सेमी. तथा सिट्टो की लम्बाई 16 से 21 सेमी. है। जोगिया रोग रोधी तथा शीघ्र पकने वाली (75–79 दिन) इस किस्म के अनाज की औसत पैदावार 30 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तथा सूखे चारे की पैदावार 70 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म का सिट्टा बालों युक्त व बेलनाकार होता है।

जी.एच.बी. 732 (2008) : जामनगर गुजरात से विकसित यह किस्म मध्यम ऊंचाई, ठोस सिट्टे, मोटे दाने और देर से पकने वाली है। इस किस्म में लगभग 52 दिनों में फूल आते हैं तथा पकाव अवधि लगभग 81 दिन है। इस किस्म से दाने की उपज लगभग 30 क्विंटल और चारे की उपज लगभग 77 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त होती है। यह किस्म देर से पकने वाली है अतः पर्याप्त समय तक आश्वासित वर्षा वाले क्षेत्रों में ही उपयुक्त है।

आर.एच.बी. 173 (2009) : कृषि अनुसंधान केन्द्र दुर्गापुरा द्वारा विकसित बाजरे की इस संकर किस्म की ऊंचाई 200 सेमी. तथा सिट्टो की लम्बाई 30 से 35 सेमी. है। मध्यम एवं कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त इस किस्म के सिट्टे लम्बे एवं कसाव लिए होते हैं। जोगिया रोग रोधी इस किस्म की पकाव अवधि 78 से 80 दिन है। दानों की औसत उपज 30 से 33 क्विंटल एवं चारे की उपज 68 से 77 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है।

आर.एच.बी. 177 (2010) : कृषि अनुसंधान केन्द्र दुर्गापुरा द्वारा विकसित इस संकर किस्म का जनन आई.सी.एम.ए. 843–22 ए (मादा) एवं आर.आई.बी. 494 (नर) के संयोग से किया गया है। अच्छे फुटान वाली इस किस्म की ऊंचाई 150–160 सेमी. तथा सिट्टो की लम्बाई 21–23 सेमी. है। जोगिया रोग रोधी तथा शीघ्र पकने वाली (74 दिन) इस

किस्म के दानों की औसत पैदावार 18–20 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तथा सूखे चारे की पैदावार 42–43 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म का सिट्टा रोयें युक्त, बेलनाकार दानों से कसा हुआ तथा दाना हल्का भूरा गोलाकार होता है। सूखा प्रतिरोधक क्षमता वाली यह किस्म देश के अत्यन्त शुष्क जलवायु क्षेत्रों के लिए उपयोगी है।

मण्डोर बाजरा कम्पोजिट 2 (एम बी सी 2) (2011) : बाजरा की इस किस्म में बालियाँ 46 से 50 दिन में निकलती है तथा 74 से 78 दिन में पक जाती है। इस किस्म के पौधों की ऊँचाई 150–175 से.मी. होती है तथा सिट्टे पूरी तरह से बाहर निकले, मध्यम लम्बे (20–22 से.मी.) तथा बेलनाकार आकृति के होते हैं। इसके दाने गोलाकार, भूरे रंग के होते हैं तथा औसत उपज दाना 12–18 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा चारा 36–50 क्विंटल प्रति हैक्टर होता है। यह किस्म जोगिया रोग के लिए प्रतिरोधी व कीड़ों के प्रति सहनशील है तथा इसमें सूखा सहन करने की क्षमता भी है।

जी.एच.बी. 905 (2012): जामनगर गुजरात से विकसित इस किस्म की ऊंचाई मध्यम, सिट्टे ठोस मध्यम लम्बाई के तथा दाने आकर्षक रंग व मध्यम आकार के होते हैं। यह किस्म सूखा प्रतिरोधी व अच्छे फुटान वाली है जो लगभग 75–80 दिनों में पक जाती है। इस किस्म से दाने की उपज लगभग 27 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त होती है।

एम.पी.एम.एच. 17 (2012) : अखिल भारतीय समन्वित बाजरा विकास परियोजना, जोधपुर द्वारा विकसित इस संकर किस्म का जनन आई.सी.एम.ए. 04999 (मादा) एवं एम.आई.आर. 525–2 (नर) के संयोग से किया गया है। अच्छे फुटान वाली इस किस्म की ऊंचाई 175 से 185 सेमी. तथा सिट्टो की लम्बाई 22 से 23 सेमी. है। जोगिया रोग रोधी तथा मध्यम अवधि (79 दिन) में पकने वाली इस किस्म के अनाज की औसत पैदावार लगभग 26 से 28 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तथा सूखे चारे की पैदावार 61 से 69 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म का सिट्टा बालों युक्त तथा दाना पीला भूरा गोलाकार होता है।

एम.पी.एम.एच–21 (2016) : अखिल भारतीय समन्वित बाजरा विकास परियोजना मण्डोर, जोधपुर द्वारा विकसित यह संकर किस्म दाने व चारे दोनों के लिए उपयुक्त है। करीब 75 दिनों में पकने वाली इस किस्म

की ऊंचाई 169 से.मी. व सिट्टे की लम्बाई 20 से.मी. और 1000 दानों का वजन 7–8 ग्राम पाया गया है।

इस किस्म के दानों की औसत उपज 24 क्विंटल व चारे की औसत उपज 48 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म डाउनीमिल्ड्यु व ब्लास्ट के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी तथा स्मट के प्रति मध्यम प्रतिरोधी पायी गई है।

खेत की तैयारी – बलुई, दोमट मिट्टी वाला क्षेत्र जिसमें जल निकास की पूरी व्यवस्था हो चुनिए। भारी मिट्टी व भराव वाले क्षेत्र में बाजरा न बोयें। सिंचित बाजरे के लिये खेत समतल होना चाहिए।

- पहली वर्षा होते ही एक अच्छी जुताई करके बुवाई करें। मिट्टी में पर्याप्त नमी होनी चाहिये। भारी मिट्टी और खरपतवार से ग्रस्त खेतों में दो अच्छी जुताइयों की आवश्यकता होती है। बुवाई के 2–3 सप्ताह पहले प्रति हैक्टेयर 10–12 टन गोबर की खाद डालें। जहां गोबर की खाद की व्यवस्था न हो सके वहां प्रति हैक्टेयर 10–15 किलो अतिरिक्त नत्रजन दीजिये।

भूमि उपचार :– पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में भूमि उपचार शीर्षक में दिये गये विवरण के अनुसार करें।

बीजोपचार :– गून्दिया या चेपा से बचने हेतु बीज को नमक के 20 प्रतिशत (1 किलो नमक प्रति 5 लीटर पानी) घोल में लगभग पांच मिनट तक डुबो कर हिलाएं। तैरते हुए हल्के बीज व कचरे को जला दीजिये। शेष बचे हुए बीजों को साफ पानी से धोकर अच्छी प्रकार छाया में सुखाने के बाद बोने के काम में लेवें। उपरोक्त उपचार के बाद प्रति किलो बीज का 3 ग्राम थाइरम दवा से उपचार करें।

- दीमक की रोकथाम हेतु 4 मिली लीटर क्लोरपॉयरीफॉस 20 ई.सी. या 10 मिली लीटर इमीडाक्लोप्रिड 600 एफ.एस. प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।
- क्षारीय एवं लवणीय मिट्टी में बोने से पहले बाजरे के बीज को एक प्रतिशत सोडियम सल्फेट में 12 घण्टे तक भिगोकर साफ पानी में धोकर छाया में सुखाने के बाद बीज को कवकनाशी से उपचारित कर बोएं। इस प्रकार से उपचारित बीज खारी मिट्टी में बोने से अंकुरण ज्यादा अच्छा होगा।

बारानी खेती के अन्तर्गत बाजरे के बीज को सैलिसिलिक अम्ल द्वारा 100 पीपीएम में 4 घण्टे डुबोकर बुवाई करने तथा दाना बनने की अवस्था में एक पर्णीय छिड़काव करने से उपज में वृद्धि पाई गई।

बीज दर एवं बुवाई :– सामान्यत चार किलो बाजरे का प्रमाणित बीज प्रति हैक्टेयर बोयें एवं कतार से कतार की दूरी 45–60 सेन्टीमीटर रखते हुए पौधों की संख्या 1.33 लाख प्रति हैक्टेयर रखें।

- बुवाई जून की पहली वर्षा के साथ अवश्य कर दीजिये। बुवाई का उपयुक्त समय जून मध्य से जुलाई के तृतीय सप्ताह तक है। वर्षा न होने पर यदि समय पर बुवाई न हो सके तो जहां पानी पर्याप्त मात्रा में हो वहां बाजरे की रोपणी तैयार कर पौध को जुलाई के अन्त तक खेत में रोप देना लाभदायक रहेगा। बीज 3–5 सेन्टीमीटर गहरा बोयें जिससे अंकुरण सफलता पूर्वक हो सके और साथ ही बीज का उर्वरक से सम्पर्क भी न हो।
- सीड ड्रील के प्रत्येक हल के पीछे 4 कि.ग्रा. वजन के घूमने वाले रबड़ के पहियों द्वारा बोई गई कतारों के चोब की मिट्टी दबाने से बीज का अंकुरण अच्छा होता है तथा रोड होने की समस्या से बचा जा सकता है।
- बुवाई के 15–20 दिन बाद छंटाई कर पौधों के बीच 13–17 सेन्टीमीटर की दूरी करें। जहां बीज न उगा हो वहां रोपणी में तैयार हुए पौधें रोप दीजिये। अधिकतम उपज हेतु एक हैक्टेयर में पौधों की संख्या 1,33,000 तक रखें।
- अनिश्चित वर्षा वाले क्षेत्रों में बाजरे को 30–30 सेन्टीमीटर की दूरी पर दो जुड़वा कतारों के बाद 30–30 सेन्टीमीटर की दूरी पर मोठ या ग्वार की चार कतारें बोई जा सकती है।

खाद व उर्वरक – बाजरे की उपयुक्त आर्थिक स्तर की अधिक उपज लेने के लिये देशी खाद के साथ उर्वरक भी देवें। सिंचित क्षेत्रों अथवा जहां वर्षा 600 मिलीमीटर या अधिक होती है वहां अधिकतम उपज के लिए 90 किलो नत्रजन एवं 30 किलो फास्फोरस प्रति हैक्टेयर दीजिये। जहां वर्षा 600 मिलीमीटर से कम हो वहां 30–60 किलो नत्रजन तथा 20–30 किलो फास्फोरस प्रति हैक्टेयर देंवे। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में बाजरे

की फसल में 15 किलो नत्रजन व 15 किलो पोटेशियम प्रति हैक्टेयर देंवे तथा रबर व्हील द्वारा 60 सेन्टीमीटर द्वारा कतारों की दूरी में दाब के साथ–साथ दो बार गुड़ाई करने से जल उपयोग क्षमता में वृद्धि होती है।

- जोधपुर खण्ड के जोन 1 ए के असिंचित क्षेत्रों में 40 किलो नत्रजन एवं 20 किलो फास्फोरस प्रति हैक्टेयर देवें।
- नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई से पहले कतारों में 10 सेन्टीमीटर गहरा ऊर कर देवें। बुवाई के 25–30 दिन बाद, वर्षा वाले दिन नत्रजन की आधी मात्रा देवें। अगर इस समय वर्षा न हो तो उर्वरक न देवें। उर्वरक की सही आवश्यकता जानने हेतु मिट्टी की जांच करानी चाहिए।

सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई :– सिंचित फसल की आवश्यकतानुसार समय–समय पर सिंचाई करें। पौधों में फुटान होते समय, सिट्टे निकलते समय तथा दाना बनते समय भूमि में नमी की कमी नहीं होनी चाहिए। वर्षा की कमी की स्थिति में पौधे पीले पड़ने से पहले ही सिंचाई करें।

- बुवाई के तीसरे चौथे सप्ताह तक खेत में निराई कर खरपतवार अवश्य निकाल देवें। इसके पश्चात् आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहें। गुड़ाई करते समय ध्यान रखें कि पौधों की जड़ें नहीं कटे।
- निराई गुड़ाई करना सम्भव न हो तो बाजरे की शुद्ध फसल में खरपतवार नष्ट करने हेतु बुवाई के तुरन्त बाद अथवा अंकुरण से पूर्व प्रति हैक्टेयर आधा किलो एट्राजिन सक्रिय तत्व का पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। छिड़काव के बाद भी निराई करके एक बार हाथ से खरपतवार अवश्य निकालें।
- रुखड़ी प्रभावित बाजरा के खेतों में चंवला या मूंग को फसल चक्र में सम्मिलित करें। बाजरा की खड़ी फसल में रुखड़ी के नियन्त्रण हेतु 2,4–डी 500 मिली लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के एक महीना बाद कतारों के बीच नोजल को सतह से 6 इंच ऊपर रखकर छिड़काव करें।
- जहां अन्तर्शस्यावर्तित फसल हो वहां केवल निराई गुड़ाई करके खरपतवार निकालें। गुड़ाई 5 सेन्टीमीटर से अधिक गहरी नहीं करें।

फसल संरक्षण –

कातरा :– रोकथाम पुस्तिका के अन्त में दिये गये विवरण के अनुसार करें।

सफेद लट नियंत्रण :– पुस्तिका के अन्त में पृथक से दिये गये विवरण के अनुसार नियंत्रण उपाय अपनायें।

- बाजरा में पत्ती भक्षक कीटों के नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टेयर भुरकें या एक लीटर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. का पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

जोगिया (ग्रीन ईयर) या हरित बाल रोग :– रोगरोधी राज 171, एच एच बी 67, आर एच बी 121 आदि किस्में बोयें। फसल में रोगग्रस्त पौधे खेत में नहीं रहने चाहिये।

- संकर बीज उत्पादन हेतु बीज को 6 ग्राम मेटालेक्सिल 35 एस. डी. से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। खड़ी फसल में खेतों में जहां जोगिया दिखाई देवें वहां बुवाई के 21 दिन बाद मैन्कोजेब 2 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़कें।

अरगट :– फसल को बचाने हेतु सिट्टे निकलते समय ढाई किलो जाइनेब या डेढ़ से दो किलो मैन्कोजेब के तीन–तीन दिन के अन्तर पर 2–3 छिड़काव करने से प्रकोप कम होगा।

- बाजरे के खेत में और उसके आसपास अन्जन घास को निराई कर नष्ट करें क्योंकि बाजरे में यह रोग अन्जन घास द्वारा फैलता है। अगर चरी बाजरा बोया हुआ हो तो इसकी कटाई करते रहें तथा उसमें सिट्टे नहीं आने देवें क्योंकि इससे आसपास की बाजरे की फसल में रोग तेजी से फैलता है।

- सिट्टे निकलते समय अरगट, काग्या एवं हरित बाल रोग का पता लगाने के लिये फसल का सावधानी से निरीक्षण करें। अरगट व हरित बाल रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट करें।
- अरगट रोग ब्लिस्टर बीटल या चेफर बीटल द्वारा भी फैलता है।
- बाजरे की बुवाई जुलाई के दूसरे सप्ताह में किये जाने पर अरगट के प्रकोप में स्वतः कमी होना पाया गया है।
- एक हैक्टेयर में छिड़काव के लिये लघु आयतन फव्वारे से 200 लीटर पानी एवं बहु आयतन फव्वारे से 1000 लीटर पानी की आवश्यकता होगी।

  ❑ **ध्यान रखें** :– अरगट ग्रसित अनाज विषैला होने के कारण मनुष्य व पशु दोनों के लिये घातक होता है। अतः अरगट ग्रसित उपज को निकालने के बाद दानों को लगभग पांच मिनट तक नमक के बीस प्रतिशत घोल (एक किलो नमक पांच लीटर पानी) में डालें। तैरते हुए कचरे एवं हल्के बीज को निकाल कर जला दीजिये। बचे हुए अनाज को साफ पानी से धोयें। अरगट ग्रस्त खेत से फसल काटने के बाद उसमें मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें ताकि रोगाणु जमीन में दब जाये और बीमारी आगे न फैलें।

  ❑ बाजरे की बुवाई जीरे के बाद ऐसी स्थिति में नहीं करें जब जीरे में पेन्डामिथेलिन दवा खरपतवार हेतु काम में ली गयी हो क्योंकि इस दवा का खरीफ में बाजरे के अंकुरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

बाजरा की फसल में थायोग्लाईकोलिक अम्ल (टीजीए) 100 पीपीएम के दो पर्णीय छिड़काव क्रमशः 50 प्रतिशत सिट्टा आने व दाना बनने की अवस्था पर करने से बाजरा की उपज में 15 प्रतिशत की वृद्धि होती है। ■